2020 की अनूठी देवस्नानपूर्णिमा 05जून को जगत के नाथ अपने जन्मोत्सव पर सुशोभित होंगे गजानन वेश में

भारत के अन्यतम धाम श्रीजगन्नाथ पुरी धाम के श्रीमंदिर में प्रतिवर्ष ज्येष्ठ पूर्णिमा को अनुष्ठित होती है चतुर्धा देव विग्रहों; भगवान जगन्नाथ,बलभद्रजी ,देवी सुभद्रा तथा श्री सुदर्शन जी की देवस्नान पूर्णिमा।वास्तव में चतुर्धा देव विग्रहों का वह महास्नान दिवस होता है जिसकी बड़ी ही सुदीर्घ और शाश्वत परम्परा लगभग एक हजार वर्षों की रही है। उस दिन श्रीमंदिर के रत्नवेदी पर विराजमान चतुर्धा देवविग्रहों को पहण्डी विजय कराकर मंदिर के देव स्नानमण्डप पर लाया जाता है तथा कुल 108 स्वर्ण कलश पवित्र तथा शीतल जल से उन्हें मलमल कर महास्नान कराया जाता है। जगन्नाथजी को 35 स्वर्ण कलश जल से,बलभद्र जी को 33 स्वर्ण कलश जल से,सुभद्राजी को 22 स्वर्ण कलश जल से तथा सुदर्शन जी को 18 स्वर्ण कलश से महास्नान कराया जाता है। अपने गाणपत्य अनन्य भक्त विनायक भट्ट की इच्छानुसार भगवान जगन्नाथ को गजनान वेश में सुशोभितकर उनका जन्मोत्सव बड़े ही अलौकिक तरीके से प्रतिवर्ष लाखों जगन्नाथ भक्तों की उपस्थिति में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। लेकिन श्रीमंदिर प्रशासन द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार कोरोना वैश्विक महामारी संक्रमण के प्रकोप के कारण 2020 की देवस्नान पूर्णिमा 05जून को पहली बार बिना जगन्नाथ भक्तों के ही अनुष्ठित होगी। कहते हैं कि आर्यावर्त्त देवभूमि है जिसके चारों दिशाओं में धाम,तीर्थ तथा पावन क्षेत्र हैं। तीर्थ वह होता है जहां के पवित्र जल से पातकी पवित्र होते हैं।पुरी धाम का महोदधि मोक्षस्नान के लिए जाना जाता है। क्षेत्र वह होता है जहां पर सनातनी देवी–देवता का निवास होता है।पुरुषोत्तम क्षेत्र में चतुर्धा देवविग्रहों का निवास है। धाम वह होता है जहां पर आधारभूत प्रभु स्वयं मुक्तिप्रद होते हैं।भगवान जगन्नाथ श्रीजगन्नाथ पुरी के श्रीमंदिर के रत्नवेदी पर अपने दर्शन मात्र से ही अपने भक्तों को भवमुक्ति प्रदान करते हैं। इसप्रकार जगन्नाथ पुरी अपने आप में धाम भी है,तीर्थ भी है तथा क्षेत्र

भी है। वहां पर आयोजित होनेवाली देवस्नान पूर्णिमा का सनातनी लोगों के जीवन में बड़ा ही आध्यात्मिक महत्त्व है क्योंकि जो चतुर्धा देव विग्रह देवस्नान पूर्णिमा के दिन महास्नान करते हैं वे समस्त वेदों के जीवंत विग्रह स्वरुप होते हैं। जगन्नाथजी साक्षात ऋग्वेद के,बलभद्र जी साक्षात साम वेद के,देवी सुभद्रा जी साक्षात यजुर्वेद की तथा भगवान ,सुदर्शन जी साक्षात अथर्व वेद के। मिली जानकारी के अनुसार 05जून,2020 को भोर में 4.00 बजे से ही देवविग्रहों को उनके रत्नसिंहासन से पहण्डी विजय कराकर श्रीमंदिर के देवस्नानमण्डप तक लाने की प्रक्रिया आरंभ होगी। छेरापहंरा की आध्यात्मिक औपचारिकता श्री जगन्नाथ पुरी धाम के गजपति महाराजा तथा भगवान जगन्नाथ जगन्नाथ के प्रथम सेवक श्री श्री दिव्यसिंहदेवजी पूरी करेंगे। अत्यधिक स्नान करने के कारण देव विग्रह बीमार हो जाएंगे और उन्हें श्री मंदिर के ''बीमार कक्ष'' में 15 दिनों तक एकांतवास के रुप में रखा जाएगा जहां पर उनका आयुर्वेदसम्म्त विधि से उचखर होगा। उस दौरान 15 दिनों तक श्रीमंदिर का कपाट भक्तों के दर्शन के लिए बंद कर दिया जाएगा। उस दौरान श्री पुरी धाम आनेवाले समस्त जगन्नाथ भक्तगण भगवान जगन्नाथ के दर्शन ब्रह्मगिरि में भगवान अलार नाथ के रुप में करेंगे। ब्रह्मगिरि में भगवान अलारनाथ की प्रस्तर की काली मूर्ति है जिसके दर्शन से साक्षात भगवान जगन्नाथ का दर्शन माना जाता है और भगवान अलारनाथ को वहां पर 15 दिनों तक निवेदित किये जानेवाले खीर भोग को महाप्रसाद के रुप में ग्रहण किया जाता है। लेकिन इस वर्ष 2020 में वैश्विक महामारी कोरोना के संक्रमण के चलते सबकुछ पर रोक है। 15 दिनों तक एकांतवास तथा आयुर्वेसम्मत उपचार के उपरांत चतुर्धा देव विग्रह स्वस्थ होते हैं। वे आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा तिथि को अपने नवयौवन रुप में दर्शन देते हैं तथा प्रतिवर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को अपनी विश्व प्रसि़द्ध रथयात्राकर अपने मौसी के घर गुण्डीचा मंदिर आते हैं। वहां पर सात दिनों तक निवास करने के उपरांत वे अपनी बाहुड़ायात्राकर श्रीमंदिर वापस लौटते हैं। 2020 रथयात्रा की सारी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं।

रथों के निर्माण के कार्य से लेकर रथों को सुसज्जित करने,उन पर प्रतिवर्ष लगाये जानेवाले तोरण–पताकों आदि की तैयारियां युद्ध स्तर पर चल रही है लेकिन कोरोना संक्रमण के चलते ऐसा लगता है कि जिस प्रकार इस वर्ष 2020 की अक्षयतृतीया,21दिवसीय चंदनयात्रा आदि श्रीमंदिर प्रांगण में ही बिना भक्तों के अनुष्ठित हुई ठीक उसी प्रकार महाप्रभु की देवस्नान पूर्णिमा 05जून को तथा रथयात्रा 23जून को भी बिना भक्तों के ही अनुष्ठित होगी। ऐसा लगता है कि कलियुग के पूर्ण दारुब्रह्म अवतारी,लीलाधर जगन्नाथजी की यही इच्छा इस वर्ष 2020 में है कि वे मात्र अपने सेवायतों तथा पुलिस सहयोगियों के संग ही देवस्नानपूर्णिमा,नवयौवन दर्शन तथा रथयात्रा मनायेंगे तो बहुत ही अच्छी बात है। सच कहा जाय तो भारत के चारों धामों में अलग–अलग कई विशिष्टताएं हैं जिनमें जगन्नाथधाम पुरी की अन्यतम विशिष्टता वहां हर साल अनुष्ठित होनेवाली चतुर्धा देव विग्रहों उनकी विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा है। ऐसा कहीं भी देखने को नहीं मिलता है कि खुद भगवान अपने भक्तों से मिलने मंदिर से बाहर आते हों। ऐसा एक मात्र श्री जगन्नाथ पुरी में ही ऐसा देखा जाता है। जय जगन्नाथ!

प्रस्तुति : अशोक पाण्डेय